श्री पार्श्वनाथ जिन पूजन

स्थापना

(नरेन्द्र छंद)

हे पार्श्वनाथ आनंदधाम प्रभु, आज वंदना करते।
बाल ब्रह्मचारी जगतारी, नाथ अर्चना करते।।
तीन लोक में ढोल बजाकर, देव दुंदुभी गाते।
मोही जन को जगा जगाकर, शुभ संदेशा लाते।।
आज मेरे उर आँगन में प्रभु, उत्सव जैसा लगता।
त्रिभुवन के स्वामी आयेंगे, निश्चित ही मन कहता है।।
इसीलिए सम्यक् रत्नों के, मैंने चौक पुराये।
श्रद्धा गृह के प्रमुख द्वार पर, तोरण हार सजाये।
प्रभु प्रतीक्षा में रत्नों के, जगमग दीप जलाये।
पद प्रक्षालन हेतु स्वर्ण के, थाल यहाँ ले आये।

दोहा

आओ पारसनाथ जी, आओ आओ नाथ।
हृदयांगन सूना पड़ा, द्वार खड़ा नत माथ।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

(गीता छंद)

क्षेरोदधि सम क्षीर जल मैं, ला नहीं सकता प्रभो।
हे क्षीरसागर नाथ तुम हो, क्षारसागर मैं प्रभो।।
श्री पार्श्वनाथ जिनेश मेरे, जन्म रोग नशाइये।
आवागमन से हूँ व्यथित, उद्धार मेरा कीजिये।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्म जरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भवताप से मैं जल रहा हूँ, और जलता जा रहा।
क्या हो गया मुझको स्वयं को, और छलता जा रहा।।
श्री पार्श्वनाथ जिनेश मेरे, भवाताप नशाइये।
आवागमन से हूँ व्यथित, उद्धार मेरा कीजिये।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

सब नाशवान पदार्थ को मैं, स्थिन बनाना चाहता।
शाश्वत अनुपम तत्त्व हूँ मैं, शब्द से ही जानता।।
श्री पार्श्वनाथ जिनेश मेरे, दान अक्षय दीजिये।
आवागमन से हूँ व्यथित, उद्धार मेरा कीजिये।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

भोगे अनेकों भोग फिर भी, चाह यह जाती नहीं।
यह वासना की आग जिनवर, अब सही जाती नहीं।
श्री पार्श्वनाथ जिनेश मेरे, ब्रह्म पदवी दीजिये।
आवागमन से हूँ व्यथित, उद्धार मेरा कीजिये।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

बीता अनंता काल फिर भी, कर्म धारा बह रही।
औ ज्ञान धारा को प्रभुवर, जानता ही मैं नहीं।

श्री पार्श्वनाथ जिनेश मेरे, ज्ञान धारा बहाइये।
आवागमन से हूँ व्यथित, उद्धार मेरा कीजिये।।5।।
ऊँ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
दीपक जले सूरज उगे पर, माह तम मिटता नहीं।
बाहर उजाला तेज भीतर में उजाला है नहीं।।
श्री पार्श्वनाथ जिनेश मुझमें, ज्ञान दीप जलाइये।
आवागमन से हूँ व्यथित, उद्धार मेरा कीजिये।।6।।
ऊँ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
भव राग से रागी हुआ मैं, द्वेष से द्वेषी हुआ।
पर आप सा सान्निध्य पाकर, क्यों नहीं ज्ञानी हुआ।।
श्री पार्श्वनाथ जिनेश मेरे, अष्ट कर्म निवारिये।
आवागमन से हूँ व्यथित, उद्धार मेरा कीजिये।।7।।
ऊँ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु बीज कर्मों का जला दो, उग नहीं सकता कभी।
मेरा मिलन मुझसे करा दो, फिर न आना हो कभी।
श्री पार्श्वनाथ जिनेश मेरे, मिष्ट शिवफल दीजिये।
आवागमन से हूँ व्यथित, उद्धार मेरा कीजिये।।8।।
ऊँ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।
निज आत्म वैभव खो चुका हूँ, क्या चढ़ाऊँ अर्घ्य मैं।
प्रभु आपका ही हो चुका हूँ, आ गया हूँ शर्ण में।।
श्री पार्श्वनाथ जिनेश मुझको, लीजिए अपनाइये।
आवागमन से हूँ व्यथित, उद्धार मेरा कीजिये।।9।।
ऊँ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक

(सखी छंद)

वैशाख कृष्ण दिन पावन, द्वितीया तिथि है मन भावन।
गर्भस्थबाल जिन आभा, से हुई नगर में शोभा।।
पितु अश्वसेन हर्षित हे, सारा परिवार मुदित है।
प्रभु प्राणत स्वर्ग विहाये, छप्पन देवी गुण गाय।।1।।
ऊँ ह्रीं वैशाखकृष्णद्वितीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
वदी पौष ग्यारसी आई, शुभ जन्म लिया जिनराई।
ऐरावत गज ले आये, निज गोद इंद्र बैठाये।।
प्रभु बनकर आये सूरज, जग तरसे पाने पद रज।
वाराणसी नगरी प्यारी, प्रभु जन-जनके मन हारी।।2।।
ऊँ ह्रीं पौषकृष्णएकादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जन्मोत्सव खुशियाँ छाई, तब जाति स्मृति हो आई।
वैराग्य सहज मन भाया, लौकांतिक ने गुण गाया।।
विमलाभ पालकी चढ़के, अश्वत्थ वनी सुर पहुँचे।
जिन दीक्षा है सुखकारी, भवि जीवों को हितकारी।।3।।
ऊँ ह्रीं पौषकृष्ण एकादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जब कमठ क्रोध बरसाये, प्रभु समता नीर बहाये।
सब विनाश गई शठ माया, कर जोड़ शरण वह आया।।
प्रभु तन मन हुआ नगन है, शिव वधू की लगी लगन है।

वदी चैत्र चतुर्थी आई, प्रीभु ज्ञान ज्योति प्रगटाई।।4।।
ऊँ ह्रीं चैत्रकृष्णचतुथ्र्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्रावण शुक्ला दिन आया, शुभ मुकुट सप्तमी भाया।
स्वर्णाभद्र कूट प्रभु आये, अष्टम वसुधा को पाये।।
छत्तीस संग मुनिराया, शिव गये सिद्ध पद पाया।
बोलो पार्श्वप्रभु की जय-जय, सम्मेदशिखर की जय-जय।।5।।
ऊँ ह्रीं श्रावणशुक्लसप्तम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जाप्य पार्श्व
ऊँ ह्रीं अर्हं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।'
जयमाला - दोहा
कामधेनु चिंतामणी, हे पारस भगवान।
कल्पवृक्ष से भी अधिक, पारसनाथ महान।।1।।
पार्श्वनाथ वंदूँ सदा, चिदानंद छलकाय।
चरण शरण हूँ आपकी, सहज मुक्ति प्रगटाय।।2।।
(ज्ञानोदय छंद)
परम श्रेष्ठी पावन परमेष्ठी, पार्श्वनाथ को वंदन है।
माता वामा देवी के सुत, अश्वसेन के नंदन हैं।।
कर्मजयी हो कामजयी उपसर्ग विजेता कहलाये।
परम पूज्य परमेश्वर हो शिवमार्ग विधाता बन आये।।3।।
नगर बनारस है अति सुंदर, अश्वसेन नृप परम उदार।
तीर्थंकर बालक को पाकर, भू पर हर्ष अपार।।
देव कल्याणक मना रहे पर, निज में आप समाये थे।
भोगों को स्वीकार किया ना, कामबली भी हारे थे।।4।।
अल्प आयु में पंच महाव्रत, धरे स्वयंभू दीक्षा ली।
चार मास छद्मस्थ मौन रह, आतम निधि को प्रगटा ली।।
तभी कमठ ने पूर्व वैर वश, पूर्व भवों का स्मरणकिया।
आँधी तूफाँ झंझाओं से, प्रभो आपको कष्ट दिया।।5।।
घोर उपद्रव जल अग्नि से, महा विघ्न करने आया।
जल से भर आई धरती पर, किञ्चित् नहीं डिगा पाया।।
आत्म गुफा में लीन रहे प्रभु, तन उपसर्ग सहे भारी।
इसीलिए भू पर गूँजी जय, पारस प्रभु अशियकारी।।6।।
वैर किया नौभव तक भारी, आखिर माया विनश गयी।
ध्यान सूर्य की किरणों से शठ, कमठ अमा भी हार गयी।।
प्रभो आपने तन चेतन का, भेद ज्ञान जो पाया हैं।
इसीलिए शठ की माया को, पल भर में विनाशाया है।।7।।
पूर्व जन्म के उपकारी को, कृतज्ञ होकर जान लिया।
पद्मावती ओर धर इन्द्र ने, आ विघ्नों को दूर किया।।
साम्य भाव धर प्रभु आपनपे, कर्मों पर जय पाई है।
इसीलिए श्री पार्श्व प्रभु की, अतिशय महिमा गाई है।।8।।
क्रोध अग्नि में जलते हैं जो, भव-भव में दुख पाते हैं।
वैर निरंतर जो रखते हैं, निज को ही तड़फाते हैं।।
भेद ज्ञान कर निज आतम के, आश्रय में जो आते हैं।
सर्व कर्म का क्षय करके वे, शिवरमणी को पाते हैं।।9।।

हे जिनवर उपदेश आपका, श्रवण करूँ आचरण करूँ।
क्षमा भाव की महा शक्ति से क्रोध शत्रु को नष्ट करूँ।।
मार्ग आपने जो बतलाया, मेरे मन को भया है।
मुझको भी भव पार करो, यह भक्त शरण में आया है।।10।।
श्री सम्मेदाचल से स्वामी, मोक्ष महापद है पाया।
चरण चिह्न का दर्शन करके, शिवपद पाने मैं आया।।
पार्श्व तीर्थंकर सर्व प्रियंकर, श्री चरणों में सिरनाया।
दिव्य शक्ति को संचित करने, आप शरण में हूँ आया।।11।।

दोहा

परं ज्योति परमातमा, पार्श्वनाथ जिनराज।
वंदौ परमानंद मय, आत्मशुद्धि के काज।।12।।
ऊँ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता

जय-जय तीर्थंकर, पार्श्वनाथ जिनेश्वर, भव-भव का संताप हरो।
नित पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' हरो।। ।। इत्याशीर्वादः।।